‘प्राकृतिक संसाधनों के संदर्भमें जातीय संघर्ष के बदलते आयाम’
(उत्तर प्रदेश के औरैया जिले के विशेष संदर्भ में)
‘Changing Dimension of Caste Conflict in context of Natural Resources’
(With special reference to Auraiya District of Uttar Pradesh)

एम. फिल. मानवविज्ञान उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु- शोध प्रबंध

(सत्र- 2014-2015)

शोधार्थी

राजीव कुमार

एम. फिल. मानवविज्ञान

(Reg. No. 2014/05/201/003)

मानवविज्ञान विभाग

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदीविश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

विषय सूची-

विषय	**पृष्ठ संख्या**
घोषण पत्र-	**I**
मानचित्र-	**ii-v**
अध्याय: प्रथम प्रस्तावना 1.1विषय का चुनाव 1.2 अध्ययन का महत्व 1.3 अध्ययन का उद्देश्य 1.4अध्ययन की सीमाएं	**1-5**
अध्याय: द्वितीय साहित्य पुनरावलोकन	**6-11**
अध्याय: तृतीय अध्ययन क्षेत्र का परिचय शोध प्रविधि 2.1 शोध प्रविधि 2.2आकड़ों के संकलन के स्त्रोत 2.3प्राथमिक स्त्रोत 2.4द्वतीयक स्त्रोत 2.5निदर्शन	**12-27**
अध्याय: चतुर्थ प्राकृतिक संसाधन का वर्गीकरण।	**28-44**
अध्याय: पंचम जाति और संघर्ष के कारकों की पहचान करना।	**45-64**
अध्याय: षष्ठम प्राकृतिक संसाधनों में जातीय संघर्ष के वर्तमान पक्षों का विश्लेषण।	**65-79**

अध्याय:सप्तमप्राकृतिक संसाधनों में जातीय संघर्ष के ऐतिहासिकपक्षों का विश्लेषण।

अध्याय: अष्टम
निष्कर्ष एवं सुझाव

परिशिष्ट
साक्षात्कार निर्देशिका
संदर्भ सूची

अध्याय – प्रथम

प्रस्तावना

प्रकृति प्राचीनकाल से ही अपनी संपदाओं या संसाधनों के लिए जानी जाती है। भारत में भी प्राकृतिक संसाधनों को विभिन्न रूपों में देखा जासकता है जिन्हें हम तीन प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं- जल, जंगल और जमीन।**गया पाण्डेय (2007)**के अनुसार - यह बताया है कि [1]प्राकृतिक संसाधन कहीं पर भी होंवह मनुष्य के लिए महत्वपूर्णहोते हैं क्योंकिआदिकाल से मानव प्रकृति से विभिन्न प्रकार की वस्तुएं प्राप्त कर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करता आया है। आज भी पूरा का पूरा प्राणी जगत प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर है।चूंकि प्राकृतिक संसाधनप्रकृति प्रदत्त होते हैं[2] प्रकृति ने मानव समाज के लिए इस संसार में अनेक प्रकार की ऐसी वस्तुएं प्रदान की हैं जिनसे मानव का जीवन यापन संभव होता है। जैसे- वन संसाधन, जल संसाधन, खनिज संसाधन, खाद्य संसाधन, ऊर्जा संसाधन, भूमि संसाधन इत्यादि। दूसरे शब्दों में **– दीप्ति शर्मा & महेंद्र कुमार (2009) ने** यह बताया है कि "प्राकृतिक संसाधन वह प्राकृतिक संपदा है जो प्राकृतिक रूपसे ही उपस्थित है तथा जिसे कृत्रिम रूप में नहीं उगाया जा सकता है।" प्राकृतिक संसाधन जीव जगत और वनस्पति जगत के काम में आने वाले स्रोत हैं जिन पर उनका जीवन यापन निर्भर रह सके। प्रकृति में एक जीव को पुष्पित, पल्लवित करने के सभी साधन हैं। जैसे-कि एक जंगली पौधे को कोई पानी खाद नहीं देता किन्तु वह अपना जीवन यापन चक्र पूरा करता है। एक जंगली जानवर प्रकृति पर ही निर्भर है और प्राकृतिक रूप से अपना जीवन यापन निर्वाह कर सकते हैं। मानव भी शुद्ध जल, वायु और प्राकृतिक रूप से उपस्थित कंदमूल फलों पर अपना जीवन यापन के साधनों का उपयोग ही नहीं करता। वरन उसने प्रकृति के भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों का उपयोग करके अपने जीवन को और बेहतर व सुखमय बनाया है। प्रकृति से प्राप्त होने वाले पदार्थ जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मानव की खुशहाली

---

[1]पाण्डेय, गया. (2007). भारतीय जनजातीय संस्कृति. नई दिल्ली : कंसैप्ट कंपनी

[2]सिंह, सुधा. (2011).पर्यावरण शिक्षा. इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन

के लिए उपयोग किए जाते हैं प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं[3] एक समय था जब यह समझा जाता था कि प्राकृतिक संसाधन वे पदार्थ क्षेत्र या वस्तुएं हैं जो मानव के लिए उपयोगी परंतु आज पृथ्वी पर या इसके अंदर उपस्थित प्रत्येक पदार्थ मानव के लिए महत्वपूर्ण है। मनुष्य का जीवन,स्वास्थ्य व प्रसन्न रहना प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता तथा पुनःपरिसंचरण पर निर्भर करता है। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन व उनका उपयोग तो प्राचीनकाल से ही होता आया है। जैसे- जैसेजनसंख्या में वृद्धि होती गई प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बढ़ता गया। अनियोजित दोहन से कई नई समस्याओं का प्रादुर्भाव हुआ। जैसे–पेड़ों को काटना, पहाड़ों को काटना, जीवों की जातियों का विलुप्त होना, वनस्पतियों का नष्ट होना। इन सब के परोक्ष प्रभाव के रूप में मृदा की उर्वरता कम होना,खनिज संपदा का क्षीण होना, मौसम तंत्र में हानिकारक परिवर्तन आना आदि समस्याएँ उत्पन्न हुई।

प्राकृतिक संसाधन किसी जाति विशेष से संबंधित नहीं होते हैं झ्न प्राकृतिक संसाधनों परसभीका समान हक है। लेकिन मनुष्य इन प्राकृतिक संसाधनों को अत्यधिक मात्रा में उपभोग कर रहे हैं जिसके चलते संसाधनों पर एकाधिकार के लिए आपसी संघर्ष की स्थिति बढ़ जाती है। हमेशा से मानव जीवन का अस्तित्व, प्रगति एवं विकास प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हो गया है। वास्तव में प्राकृतिक संसाधन वे हैं जिनकी उपयोगिता प्राणियों के लिए हो। प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार ने समाज को प्रतिस्पर्धा के दौर में खड़ा कर दिया है। जो जितना ज्यादा संसाधनों का उपभोग करता है वह ज्यादा सफल माना जाता है। इस प्रतिस्पर्धा में लगातार नए आयाम जुड़ जाते हैं। भारतीय प्रष्ठभूमि वर्तमान समय में यह संघर्ष जाति पर आधारित नजर आते हैं, क्योंकि कई क्षेत्रों में संसाधनों पर जाति विशेष का ही वर्चस्व दिखाई देता है।

डॉ. बी. पी. मैथिल (2009) ने यह बताया है कि मानव समाज के उद् विकास से ही मनुष्य में सामाजिकता और सामाजिक संघर्ष की प्रवृत्ति स्वभाविक रूप से मौजूद रही है। मनुष्य की सामाजिकता की प्रवृत्ति समाज को जहाँ एकजुट करती है तो वहीं दूसरी तरफ संघर्ष की प्रवृत्ति पैदा करतीहै।आज हमारे समाज का प्रत्येक मनुष्य

---

[3]सिन्हा, मेघा. (2007). पर्यावरण संरक्षण. नई दिल्ली: वंदना पब्लिकेशन.

अपने जीवन की बुनियादीआवश्यकताओं एवं भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संघर्षरत है। जब मनुष्य अपनी आवश्यकताओं एवं महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में जब सफल नहीं हो पाता है तो वह समाज के विरुद्ध कार्य कर सामाजिक विघटन करता है। प्रकृति संसाधनों के उपभोग के लिए लोगों में प्रतिस्पर्धा अत्यधिक बढ़ गई जिसके कारण जातीय संघर्षऔर बड़ा रूप लेता जा रहा है।प्राकृतिक संसाधनों में जातीय संघर्ष एक ऐसा विषय है जिस पर अनेकों लेख उपलब्ध हैं परन्तु प्राकृतिक संसाधनों में जातीय संघर्ष पर लेखों का अभाव देखने को मिलता है।

1.1 विषय का चुनाव भारत एक कृषि प्रधान देश है यहाँ की भूमि पर प्राकृतिक संसाधनों के भंडारहैं। इस भारत भूमि के लोग प्रकृति से उत्पन्न संसाधनों से अपना जीवन यापन करते हैं और इसी भूमि पर अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं। वर्तमान समय में भारतवासी प्राकृतिक संसाधनों को बहुत ज्यादा मात्रा में उपयोग में ला रहे हैं। इन प्राकृतिक संसाधनों का हनन अधिक मात्रा में हो रहा है। जिससे कि आज प्रकृति ने भी अपना नियम बदल दिया है।

जैसे – बे-मौसम बरसात ,कहीं भूस्खलन तो कहीं तूफान जैसी प्रक्रियाएं चल रहीं है जिसके कारण प्राणी जीवन खतरे में है। इन सभी का कारण अत्यधिक मात्रा में औद्योगीकरण तथा नगरीकरण। वर्तमान समय में व्यक्ति प्राकृतिक संसाधनों में जल,जंगल एवं जमीनमें अनेक प्रकार के प्रकृति के खनिज संसाधन व्याप्त हैं। इसको मानवअपने जीवन संबंधी काम में ला रहा है जिसके चलते खनिज संसाधनों में कमी आ रही है संसाधनों में कमी आने के कारण हमारी आगे आने वाली पीढ़ी को अँधेरे में जीवन यापन करना पड़ेगा। प्राकृतिक संसाधनों की कमी को लेकर तथा उनका अधिक मात्रा में दुरुपयोगहो रहा है।

प्राकृतिक संसाधनों को लेकर मानव आपस में संघर्ष कर रहे हैं यहाँ तक कि हत्याएं तथा आंदोलन भी बहुत ज्यादा मात्रा में चल रहे हैं।इन सबके चलते इस समस्या के अध्ययन का प्रयास किया गया है।

1.2 अध्ययन का महत्व-प्राकृतिक संसाधनों में जातीय संघर्ष को समझने में अंतद्रष्टि की आवश्यकता होती है जो सिर्फ क्षेत्र कार्य से ही संभव हो सकती है क्योंकि समाज समय-समय पर विभिन्न परिवर्तनों से गुजरता

है।वर्तमान समय में आधुनिकीकरण ,औद्योगीकरणऔर नगरीकरण का समय चल रहा है। इन सभी के चलते प्राकृतिक संसाधनों को लेकर जातीय संघर्ष बढ़ते ही जा रहे हैं। प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताएं बढ़ती ही जा रहीं हैं जिससे कि समाज में जातीय संघर्ष बड़ रहे हैं।

1.3 अध्ययन का उद्देश्य-

1- प्राकृतिक संसाधनों का वर्गीकरण।

2- जाति और संघर्ष के कारकों की पहचान करना।

3- प्राकृतिक संसाधनों में जातीय संघर्षके ऐतिहासिक पक्षों का विश्लेषण।

4- प्राकृतिक संसाधनों में जातीय संघर्षके वर्तमान पक्षों का विश्लेषण।

1.4 अध्ययन की सीमाएं -

1- **समय की समस्या–**एक गुणवत्तापूर्ण शोध के लिए समय की पर्याप्तता आवश्यक है। लघु शोध प्रबंध एक निश्चित और कम समय में किया गया।

2- **दूरी की समस्या-**अध्ययन क्षेत्र निवास स्थान से दूर होने के कारण समय की बर्बादी होती थी क्योंकि प्रतिदिन आने- जाने में ही ज्यादा समय लग जाता था।

3- **प्रतिकूल मौसम-**क्षेत्रकार्य अगस्त से सितंबर माह में होने के कारण गर्मी,धूप और बारिश के कारण क्षेत्रकार्य में समस्याएँ आयीं।

4- **वाहन की समस्या-** अध्ययन क्षेत्र निवास स्थान से 10 किलोमीटर दूर था जिसके चलते वाहनों की समस्याएँ आतीं थीं।

5- **सूचनादाताओं से मिलने की समस्या-** अध्ययन क्षेत्र में सूचनादाताओं से मिलने के लिए उनसे उनके अनुसार समय लेना पड़ता था।

****

अध्याय – सप्तम

प्राकृतिक संसाधनों में जातीय संघर्ष के ऐतिहासिक पक्षों का विश्लेषण

प्राकृतिक संसाधनों में अध्ययन क्षेत्र के माध्यम से ऐतिहासिक संघर्षों को देखें तो हम अनेक रूपों में देख सकते हैं।जैसे- जातीय तथा अंतरजातीय संघर्ष, राज्यीय तथा अंतरराज्यीय संघर्ष और राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष।प्राकृतिक संसाधनों में नदियों को लेकर संघर्ष, तालाबों को लेकर संघर्ष, वनों को लेकर संघर्ष, भूमि को लेकर जो संघर्ष हुये हैं उनका विश्लेषण किया गया है कि ऐतिहासिक काल में प्राकृतिक संसाधनों में कैसे संघर्ष होते थे। सबसे पहले हम नदियों के जल को लेकर जो जातीय तथा अंतरजातीय, राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय संघर्ष हो रहे हैं उनको हम अध्ययन क्षेत्र से मिले आकड़ों के माध्यम से देख सकते हैं।[4] नदियाँ अपने प्राकृतिक रूप में प्रवाहित होती हैं तथा किसी एक राजनीति इकाई से नियंत्रित न होकर भू-आकृतिक दशाओं के अनुसार बहती हैं। इनमें प्रवाहित जल ग्रहण क्षेत्र के आकार तथा उच्चावच के अनुसार वितरित होता है। यदि कोई देश काफी विषम उच्चावच में अवस्थित है जहां नदी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में होती है तो वहाँ जल की मात्रा तो पर्याप्त होगी। लेकिन उसका वितरण हिस्सा उसे उपलब्धता के अनुपात में न मिलकर आगे के अफवाह क्षेत्र में अवस्थित देश या राज्य के साथ एक निश्चित अनुपात में मिलेगा। आज जल को किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का हृदय माना जाता है। जिस पर सभी आर्थिक क्रियाएँ निर्भर करती हैं लेकिन निरंतर बढ़ती मांग एवं घटती मात्रा एवं गुणवत्ता के कारण जातीय एवं अंतरजातीय स्तर पर जल विवाद उत्पन्न हुये हैं जिसको हम ऐतिहासिक रूप से देख सकते हैं।

साक्षात्कार के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र में जो प्राकृतिक संसाधनों को लेकर संघर्ष हुये हैं। उनको ऐतिहासिक रूप से देख सकते हैं क्योंकि ये संघर्ष आज से करीब 25 से 30 साल पहले के हैं। जब जनसंख्या की मात्रा बहुत कम

गुर्जर, राम कुमार & जाट, बी.सी.(2005). जल संसाधन भूगोल. जयपुर एवं नईदिल्ली: रावतपब्लिकेशन.

थी तब इन प्राकृतिक संसाधनों की उपयोगिता कम थी जिसके करण संघर्ष भी एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र एक राज्य से दूसरे राज्य के अंतरगर्त देखे जाते थे लेकिन वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि के कारण संघर्ष एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र और हर एक व्यक्ति से संघर्ष देखने को मिलता है।

जल संसाधनों में संघर्ष-

उमाशंकर गुर्जर और राकेश निषाद के साथ संघर्ष

कारण- तालाब से सिचाई के संदर्भ में

कब- 1985 में

उमाशंकर गुर्जर और राकेश निषाद दोनों लोग सिकरोड़ी गाँव के निवासी हैं। यह गाँव पूरा का पूरा जंगल क्षेत्र में बसा हुआ है। यहाँ के लोग खेती का काम करते हैं। सूचनादाताओं द्वारा मिली जानकारी के अनुसार यह पता चला है कि राकेश निषाद तालाब में सिंगाड़े की फसल करते हैं। एक बार उमाशंकर गुर्जर ने तालाब से सिचाई के लिए पानी को ले लिया था उसी को लेकर राकेश निषाद ने उमाशंकर से कहा कि तालाब से पानी क्यों ले लिया। इतना कहते ही दोनों पक्षों में गाली गलौज होने लगी। इसके बाद राकेश ने कहा कि हमको गाली क्यों दे रहे हो। इतना कहते ही उमाशंकर ने राकेश निषाद को थप्पड़ मार दिया और कहा कि कल दूसरे व्यक्ति ने पानी लिया था उससे तुमने कुछ नहीं कहा। इसके बाद राकेश निषाद ने केश दर्ज करवा दिया था और इसके बाद उमाशंकर को दंड व पैसों का भुगतान करना पड़ा।

इसी प्रकार से जल को लेकर संघर्ष शिवसिंह और पुलिस के साथ हो गया था।

कारण- नदी के जल से मछली पकड़ने के संदर्भ में 1980 में

शिवसिंह निषाद सिकरोड़ी गाँव का निवासी है। यह गाँव जंगल में यमुना नदी के किनारे बसा हुआ है। यहाँ के लोगों का जीवन यापन प्रकृति की चीजों पर निर्भर करता है। जंगल से लकड़ी काटना, नदी से मछली पकड़ना और जंगल से फल फूल इकट्ठा करना है। एक बार शिवसिंह निषाद नदी से मछली पकड़ रहा था उसी समय पुलिस आ गई और शिव सिंह को मछली लेने से मना कर दिया। इसके बाद शिवसिंह ने पुलिस से कहा कि मछली लेने से आप मना क्यों कर रहे हैं। यह तो हम जंगल वासियों का काम ही है। इतना कहने के बाद पुलिस वाले ने शिवसिंह को पकड़ लिया और कहा कि इस नदी पर सरकारी कब्जा है नदी से कोई व्यक्ति मछली नहीं पकड़ सकता है। इस प्रकार से दोनों लोगों में विवाद हो गया था।

इसी प्रकार से जल को लेकर और भी संघर्ष देखने को मिलते हैं। जैसे - नदी में बांध को लेकर संघर्ष 1987 में दो पक्षों के बीच संघर्ष हो गया था। क्योंकि नदी में जब पानी की मात्रा कम हो जाती है तब ऊपरी क्षेत्र के लोग नदी में बांध बांध लेते हैं। 1987 में नदी में ऊपरी क्षेत्र के लोगों द्वारा पानी को रोक लिया गया था। इसके बाद नीचे क्षेत्र के लोगों ने जाकर हंगामा किया था और दोनों पक्षों के लोगों में संघर्ष हो गया था। इसके बाद यह मामला कोर्ट तक पहुँच गया था।

इसी प्रकार से ब्रजनंदन निषाद पुलिस से भीजल को लेकर संघर्ष 1999 में हो गया था।

कारण- नदी के जल को लेकर- ब्रजनंदन निषाद एक नाव चलाने वाला व्यक्ति था जो कि उसी नदी में पहले नाव को चलता था 1999 में नदी का जल स्तर अधिक मात्रा में बढ़ने के कारण ब्रजनंदन की नाव नदी में डूब गई थी जिसके चलते कई लोगों की जाने चली गई थी। इसी को लेकर पुलिस ने ब्रजनंदन पर केश दर्ज कर दिया गया था क्योंकि नदी का जल स्तर अधिक मात्रा में होने के कारण नदी में नाव क्यों चलाई जिससे कि कई लोगों की जान चली गई थीं।

भूमि संसाधनों में संघर्ष-

अध्ययन क्षेत्र में जल संसाधनों के अलावा भूमि संघर्ष को भी देखा जा सकता है। संजय निषाद और रघुवीर गुर्जर से भूमि को लेकर संघर्ष 1988 में हो गया था। कारण यह था कि वहाँ की भूमि ज़्यादातर पहाड़ी है समतल तो

बहुत ही कम मात्रा में देखने को मिलती है। वहाँ की भूमि में सबसे ज्यादा संघर्ष नदी के किनारे पड़ी भूमि में संघर्ष देखने को मिलता है। संजय निषाद ने नदी के किनारे पर पड़ी भूमी को जोतने लायक बना दिया था। इस जमीन को संजय द्वारा जोतने के कारण रघुवीर गुर्जर ने उस पर दबाब डाला और कहा था कि यह जमीन हमारे खेत के पास है इसको हम जोतेंगे इस कारण से इन लोगों में आपसी संघर्ष पैदा हो गया यहाँ तक कि उस नदी की भूमि में अंतरजातीय संघर्ष पैदा हो गया था। यह कहा जाता है कि यह संघर्ष बहुत दिनों तक चला।

भूमि संसाधन को लेकर एक और संघर्ष1985 मेंहुआ था। यह संघर्ष एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के लोगों में हुआ था। मिली जानकारी के अनुसार यह पाया गया कि जब वहाँ की भूमि पर कोई सरकारी अधिकार नहीं था तो वहाँ के लोगों ने पहाड़ी भूमि को समतल करके जोतने लायक बना दिया था। जब एक क्षेत्र के लोग दूसरे क्षेत्र की तरफ पहाड़ों को समतल कर रहे थे तब दूसरे क्षेत्र के लोगों द्वारा मना किया गया था कि हमारे क्षेत्र की भूमि को समतल न किया जाये यह हम लोगों की जमीन है। इस प्रकार से इन दोनों पक्षों के बीच काफी समय तक संघर्ष चला था और यह संघर्ष की प्रक्रिया को कोर्ट के माध्यम द्वारा समझौता किया गया था। इस प्रकार से पहले समय में ज़्यादातर संघर्ष एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के लोगों द्वारा संघर्ष जारी रहते थे। लेकिन वर्तमान समय में यही संघर्ष जातिगत तथा एक क्षेत्रीय संघर्ष होने लगे हैं। इन सबका कारण बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण औद्योगीकरण प्रक्रिया का निरंतर चलना है। जिसके कारण ये संघर्ष वर्तमान समय में देखने को मिलते हैं।

वन संसाधन में संघर्ष-

इस प्रकार से ऐतिहासिक संघर्षों को हम वन संसाधन के माध्यम से भी देख सकते हैं। वन के संदर्भ में संघर्ष1995 के करीब अनन्तराम ठाकुर और वन अधिकारी से संघर्ष हो गया था। कारण यह था कि अनन्तराम ठाकुर सिकरोड़ी गाँव का निवासी है जहाँ पर वन ही वन है और गाँव के पास ही में यमुना नदी बहती है। संघर्ष का कारण यह था कि अनन्तराम ठाकुर वन से बबूल की लकड़ी काट रहा था लकड़ी काटते समय वन अधिकारी आ गया था उसने अनन्तराम को लकड़ी काटने से रोका कि तुम लकड़ी क्यों काट रहे हो। यह तो सरकारी सम्पदा है इसके बाद अनन्तराम ठाकुर ने वन अधिकारी से कहा कि यह जंगल तो हमारे पूर्वजों का है यहाँ पर हमारे पूर्वज हजारों

साल से रह रहे हैं और जंगल ही हमारे भगवान हैं। जंगल से हमारे लोगों की अर्थव्यवस्थाएं जुड़ी हैं। जैसे कि जंगल से लकड़ी को काटकर बेंचना, नदी से मछली पकड़ कर बेंचना, खनिज संसाधनों का उपयोग घर के निर्माण, होटल के रूप में करते हैं। इस प्रकार से हमारी जीवन शैली इन्हीं प्राकृतिक संसाधनों से जुड़ी हुई हैं। इन सभी बातों को लेकर दोनों में आपसी संघर्ष हो गया और इसके बाद यह संघर्ष काफी दिनों तक चलता रहा।

वन संसाधन को लेकर संघर्ष 1993 के अंतरगर्त ब्रजनंदन और जगनलाल से हो गया था। क्योंकि ब्रजनंदन और जगनलाल के खेत पास में होने के कारण दोनों लोग डाब के चलते आपस में लड़ गए थे। ब्रजनंदन ने जगनलाल के खेत की मेढ़ी से डाब काट लिया था। इन दोनों लोगों की खेती वन के अंतरगर्त आती है। जगनलाल के रोकने पर ब्रजनंदन ने गली गलौज करना शुरू कर दिया और कहा कि यस सब जमीन जंगल की है हम डाब को काटेंगे। इसी को लेकर दोनों में संघर्ष शुरू हो गया और यह प्रक्रिया चलने के बाद मामला काफी दिनों के बाद सुलझा।

वन अधिकारी से साक्षात्कार लेने के माध्यम से एक और संघर्ष सामने आया था। वन अधिकारी द्वारा बताए जाने से यह पता चला है कि हमारा संघर्ष करीब सन 1990 के करीब सिकरोड़ी गाँव के लोगों से हो गया था। जब हमारी नौकरी लगी हुई थी तब हमको पता ही नहीं था कि जंगल के लोग कैसे होते हैं। ड्यूटी के दौरान मेंजंगल से जा रहा था। उस समय सिकरोड़ी गाँव के कुछ लोग लकड़ी को काट रहे थे तो मैंने रोका कि लकड़ी मत काटो यह सरकारी लकड़ी है। इतना कहते ही उन लोगों ने हमको गाली दी और एक दो थप्पड़ मार दिया। इसके बाद मैंने उन लोगों को गिरफ्तार करवा लिया था और करीब आठ साल तक उन लोगों पर केश चला।

खनिज संसाधनों में संघर्ष

इसी प्रकार से ऐतिहासिक संघर्षों को खनिज संसाधन के माध्यम से देख सकते हैं। खनिज को लेकर संघर्ष एक राज्य से दूसरे राज्य के बीच संघर्ष, एक जिला से दूसरे जिला के बीच संघर्ष, एक गाँव से दूसरे गाँव के बीच संघर्ष अध्ययन क्षेत्र के माध्यम से देखने को मिलते हैं। अध्ययन क्षेत्र में मिली जानकारी के अनुसार यह पाया गया कि सन 1980 के करीब संघर्ष खनिज को लेकर हुआ था क्योंकि अध्ययन क्षेत्र में नदी, जंगल होने के कारण दूसरे

जिले व दूसरे क्षेत्र के लोग उस जंगल से मिट्टी, नदी से रेत, मौरम लेने के लिए आते थे। एक बार दूसरे क्षेत्र के लोग नदी से बालू, मौरम की खुदाई कर रहे थे तो वहाँ के लोगों द्वारा मना करने पर वे लोग नहीं माने। तो दोनों पक्षों के लोगों में संघर्ष छिड़ गया और इतना ही नहीं बहुत अधिक मात्रा में खून खराबा भी हो गया था। इस प्रकार से प्राकृतिक संसाधनों में ऐतिहासिक संघर्ष देखने को मिलता है। वर्तमान संघर्ष को देखें तो बहुत ही अधिक मात्रा में अंतर देखने को मिलता है। पहले संघर्ष एक क्षेत्र व दूसरे क्षेत्र के लोगों में अधिक मात्रा में होते थे। लेकिन वर्तमान समय में यही संघर्ष पास पड़ोस से लेकर घर- घर में देखने को मिलते हैं।

ऐतिहासिक काल में जनसंख्या सीमित मात्रा में थी तो इतनी अधिक मात्रा में संघर्ष नहीं होते थे और संघर्ष होते भी थे तो एक राज्य से दूसरे राज्य के लोगों के बीच, एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र के लोगों के बीच लेकिन वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि के कारण इतनी अधिक मात्रा में प्राकृतिक संसाधनों का हनन हो रहा है कि संघर्ष एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के लोगों के बीच, एक जाति से दूसरी जाति के बीच संघर्ष देखने को मिलते हैं।

****